सपना था या हकीकत

अमोदिनी वरमानी, ऐमिटी इंटरनेशनल स्कूल गुरुग्राम, सैक्टर 43, कक्षा 10 डी

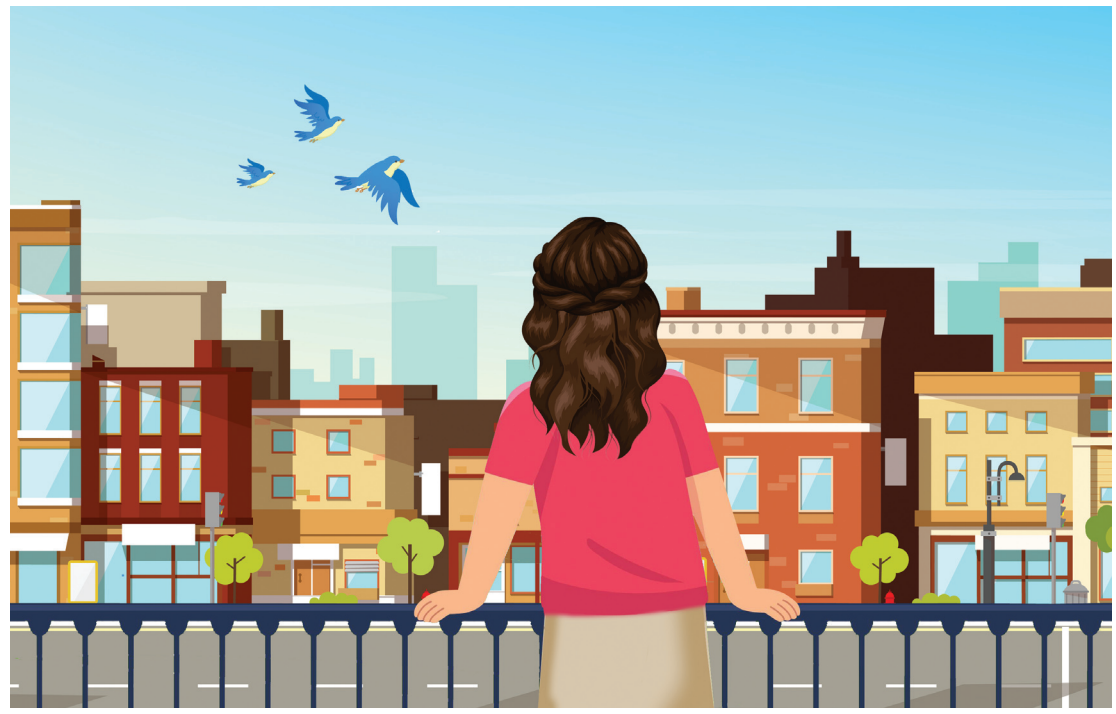

मार्च का महीना था। पाँचवी कक्षा के नतीजे आ गए थे। नई कक्षा में जाने का उत्साह मेरी बेचैनी को बढ़ा रहा था। पिताजी के दफ़्तर से आते ही मैं उनके साथ नई वर्दी, पुस्तकें एवं अन्य सामग्री लेने बाज़ार गई। बाज़ार से घर आकर मैं थक कर सो गई थी। सो कर जब उठी तो देखा कि सभी सहमे-से अपने घरों में क़ैद हैं, सड़कों पर लोगों की आवाजाही कम है। घर के बाहर जाने पर प्रतिबंध है। चारों तरफ़ सन्नाटा है। कोरोना वायरस का सबको ख़ौफ़ है। यह सब क्या हो रहा है? पता चला कि अब मैं विद्यालय भी नहीं जा सकती थी। मेरा मन उचाट हो रहा था। मुझे अपने प्यारे मित्र, शैरी की याद आई जो मेरा पालतू कुत्ता था। आज जब मैं बरामदे में आई तो देखा कि शैरी भी चुपचाप खड़ा था। तभी मुझे एक छोटी-सी चिड़िया बरामदे में दिखी और उसके बाद अनेक चिड़ियाँ चहकती हुई आसमान में झुंड में उड़ती हुई दिखाई दीं। जैसे वे स्वच्छंद महसूस कर रही हों। कितना अद्भुत नज़ारा था! आसमान साफ़ दिखाई दे रहा था। मैं विद्यालय न जा पाने का, अपने दोस्तों के साथ समय न व्यतीत कर पाने की सारी वेदना भूल गई। बस इसी सोच में डूबी रह गई कि क्या हम ही हैं जिन्होंने इन पक्षियों को, इस नीले आसमान को और इस बहती हुई निर्मल हवा को बांध रखा है? मुझे इस बात का अहसास हुआ कि हम लोगों ने प्रकृति के पेड़-पौधों, पशु-पक्षियों तथा झरनों का ख़्याल नहीं रखा है। यह हम मनुष्य ही हैं, जो उन संसाधनों के मूल्य का अहसास नहीं करते हैं जो प्रकृति ने हमें प्रदान किए हैं। हम वास्तव में प्रकृति के अमूल्य संसाधनों की ओर तब तक कृतज्ञता नहीं व्यक्त करते जब तक हम उनसे वंचित नहीं हो जाते। मैं इसी सोच में डूबी हुई थी कि अचानक शैरी की आवाज़ आई। उसके खाने के लिए मेज़ पर रखे काँच के मर्तबान में रखे हुए बिस्कुट लेने दौड़ी तो मर्तबान नीचे गिर पड़ा और जैसे ही उसके गिरने की आवाज़ आई, वैसे ही मेरी भी नींद खुल गई। क्या यह सिर्फ़ एक सपना था? आँखें खुली तो सन्नाटा अब भी था, सड़क पर लोग दिखाई नहीं दे रहे थे। जो भी मैंने सपने में देखा था, वह सब तो सच था। लेकिन अब मुझे कोई भय न था, क्योंकि मैं इस बात से भली-भाँति अवगत हो गई थी कि इन परिस्थितियों का सामना करना हम सबका कर्तव्य है। इसी भरोसे के संग एक उम्मीद भी जुड़ी हुई थी कि मैं पुनः अपने विद्यालय जा पाऊँगी, दोस्तों से मिल पाऊँगी तथा सब कुछ ठीक हो जाएगा। पहली बार ऐसा महसूस हुआ कि कोविड की वह घड़ी, जो अभिशाप समान प्रतीत होती थी, वह वास्तव में मनुष्य के लिए सीख लेने का दौर था। किसी ने सही कहा है, कि हमनें यह धरती अपने पूर्वजों से विरासत में नहीं ली है, बल्कि हमनें इसे अपनी आने वाली पीढ़ियों से उधार स्वरूप लिया है, अतः हमारी नैतिकता इसी में है कि हम इसका ध्यान रखें, तथा अपनी प्रकृति के अमूल्य संसाधनों को नष्ट न करें। जी टी

देवदार की इच्छा

देव्यांश मिश्रा, ऐमिटी इंटरनेशनल स्कूल, मयूर विहार, कक्षा 3 बी

एक देवदार का पेड़ अपने पत्तों से खुश नहीं था। उसकी पत्तियाँ सुइयों के आकार की थीं। पूर्णिमा की रात थी जब चाँद अपनी सुंदरता की चरम सीमा पर था तब देवदार के पेड़ ने चाँद से अपना दुख ज़ाहिर किया,'चंदा मामा काश! मेरे पत्ते सोने की तरह सुनहरे होते जो सुबह सूरज की किरणें पड़ते ही चमक उठते'। अगले दिन सुबह जब सूरज निकला तो देवदार ने देखा कि उसके पत्ते सुनहरे हो गए हैं। यह देखकर वह बहुत खुश हुआ। थोड़ी देर बाद वहाँ एक लकड़हारा आया। जब उसने सुनहरे पत्ते देखे तो उसके मन में लालच आ गया और उसने सारे पत्ते तोड़ डाले। देवदार का पेड़ उदास हो गया।
वह बहुत क्रोधित हुआ और उसने कामना की कि 'मेरे सभी पत्ते काँच में बदल जाएँ और कोई भी उन्हें तोड़ न सके'। अगली सुबह उसने देखा कि उसके सारे पत्ते काँच के हो गए हैं लेकिन फिर रात में तेज़ तूफ़ान आया और काँच के पत्ते छोटे-छोटे टुकड़ों में टूट गए। अब वह बहुत दुखी हुआ और उसने कामना की कि, 'मेरे सभी पत्ते हरे हो लेकिन वे पहले की तरह सुई के आकार के न हों'।
अगली सुबह उसके पत्ते घने हरे थे। वह इससे बहुत खुश था, लेकिन तभी जिराफ़ों का एक परिवार वहाँ से गुजरा और उसने लगभग सभी पत्तियों को चबा-चबाकर खा लिया। देवदार फिर से निराश हो गया और उसने प्रार्थना की और कामना की कि 'काश मुझे मेरी मूल पत्तियाँ वापस मिल जातीं'। वह समझ गया कि प्रकृति ने उसे अद्वितीय बनाया है और उसे इसका सम्मान करना चाहिए। दूसरों की नकल करने से केवल दुख ही मिलेगा। अगली सुबह, उसकी इच्छा पूरी हुई और उसे अपनी मूल सूई के आकार की पत्तियाँ वापस मिल गईं।
यह कहानी हमें सिखाती है कि जो है उसमें संतोष करें और अपनी तुलना दूसरों से नहीं करें। हमारे पास जो कुछ है हमें उसी में खुश रहना चाहिए।

हवेली का राज़

उन्नति कुमारी, ऐमिटी इंटरनेशनल स्कूल, रायपुर, कक्षा 9 ए

एक गाँव में बहुत पुरानी हवेली थी। वहाँ सालों से कोई नहीं जाता था क्योंकि सब सोचते थे कि वहाँ भूतों का वास है। गाँव में दो सहेलियाँ वर्षा और किरण रहती थीं। एक दिन दोनों गेंद से खेलते-खेलते उस भूतिया हवेली के अंदर चली गयीं। घुसते ही हवेली का दरवाज़ा ज़ोर से बंद हो गया। दोनों के डर के मारे पसीने छूटने लगे। अंदर कई अँधेरे कमरे थे। वर्षा ने एक कमरे की ओर इशारा करते हुए कहा कि चलो उस कमरे में चलते हैं। उस कमरे में एक अलमारी थी। अचानक किसी के चिल्लाने की आवाज़ आई तो वे दोनों डर के मारे अलमारी में घुस गईं और अपनी आँखें बंद कर ली। उन्होंने जब आँखें खोली तो वो अपने गाँव के बरगद के पेड़ के नीचे थीं पर उनका गाँव कुछ बदला-सा लग रहा था। वहाँ घरों के जगह पेड़ थे और उस बरगद के पेड़ पर जो झूला वर्षा और किरण ने लगाया था, वो वहाँ नहीं था। असल में वो अतीत में चली गई थीं और वह अलमारी जादुई थी। उन दोनों ने देखा कि जिस हवेली में वो गई थीं। वह बिल्कुल नई थी। उस हवेली में एक ज़मींदार रहता था, उसे उसके दोस्त ने एक जादुई अलमारी दी थी जिससे वह समय में कहीं भी जा सकता था। पर एक रात उसके घर एक शेर घुस गया और उसने ज़मींदार के घर के सारे सदस्यों को मार दिया और तब से उस हवेली में कोई नहीं जाता था क्योंकि लोग मानते थे कि ज़मींदार और उसके परिवार के सदस्यों की आत्माएँ वहाँ घुमती हैं। यह सब जानने के बाद जब वर्षा और किरण आलमारी में घुसे तो वह वापस वर्तमान में पहुँच गए और उन्होंने सब गाँव वालों को उस हवेली की सच्चाई बताई और उस अलमारी को शहर के म्यूज़ियम में रखवा दिया ताकि कोई उसका गलत इस्तमाल न कर सके। जी टी

जादुई दवा

अभिश्री जैमन, ऐमिटी इंटरनेशनल स्कूल, साकेत, कक्षा 8 बी

रीना पेड़ के नीचे बैठकर बहुत रो रही थी। उसकी माँ, बीना ने उससे रोने की वजह पूछी। रीना सुबकते हुए बोली कि उसकी लंबाई न बढ़ने की वजह से वह अपने दोस्तों से छोटी है। सब उसे छुटकी कहकर चिढ़ाते हैं। बीना उसे समझाकर घर ले गई।
रीना की नानी को जब यह बात पता चली तो अपने गाँव की मशहूर दवा लाई जिससे लंबाई बढ़ती थी। उस जादुई दवा का नाम था हंसियालू। नहीं, नहीं, इसे खाने के बाद हँसी नहीं आती रहती, रीना की नानी ने बीना को बताया कि यह एक आर्युवेदिक दवाई है और इसे ख़ाली पेट खाया जाता है। उन्होंने यह भी बताया कि इसे खाने के तुरंत बाद बैठना नहीं होता है वरना यह उल्टा असर कर सकती है।

बीना ने उस दवाई के लड्डू बनाए और हर दिन सुबह रीना को वह लड्डू खिला देती थी जिसके बाद रीना दौड़ के लिए जाती थी।
छह महीने बाद रीना उन सहेलियों से भी अधिक लंबी हो गई जो उसे चिढ़ाया करती थीं। इस जादुई दवा के बारे में बीना ने अपनी एक और सहेली, राधिका को बताया जो कि अपने बेटे, आरव की लंबाई को लेकर चिंतित थी।
राधिका ने भी आरव को वह दवाई देनी शुरू कर दी किन्तु आरव आलसी लड़का था जो दिन भर बिस्तर पर लेटे रहता या टीवी देखता रहता था। उसकी माँ के कई बार कहने के बाद भी वह दवाई खाने के बाद किसी भी तरह का व्यायाम नहीं करता था। नतीजा यह हुआ कि वह लंबा होने की जगह मोटा होता चला गया। शुरू के कुछ महीनों तक तो उसे अहसास नहीं हुआ पर जब उसके दोस्त उसे मोटू कहकर चिढ़ाने लगे तब उसे अपनी गलती का अहसास हुआ। किन्तु अब बहुत देर हो चुकी थी। तो देखा आपने, जादुई दवा का असर दिखाने के लिए भी मेहनत ज़रूरी है।
रोगों का कोई मोड़ नही,
मेहनत का कोई तोड़ नहीं,
सदा रखो संयम और संबल,
जीवन अंधी दौड़ नहीं।